फुलवारी में नन्हे-मुन्नों की किलकारी

भारत डोगरा

वैसे तो हमारे देश में बच्चों के पोषण के लिए आंगनवाड़ी व मिड डे मील जैसी परियोजनाएं चल रही हैं, पर व्यापक स्तर पर यह कमी सामने आ रही है कि छः महीने से तीन वर्ष आयु वर्ग के नन्हें बच्चों के साथ न्याय नहीं हो रहा है। यह आयु पोषण व स्वास्थ्य की दृष्टि से अति संवेदनशील व महत्त्वपूर्ण मानी गई है। छः महीने के बाद बच्चे को स्तनपान के साथ अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। यह पोषण बच्चे को दिन में कई बार थोड़ा-थोड़ा देना होता है।

देश के अधिकांश स्थानों में आंगनवाड़ी में 3 वर्ष से कम आयु के बच्चों को नहीं रखा जाता है। इसके स्थान पर उनकी मां को उन्हें घर में खिलाने के खाद्य दे दिए जाते हैं जो प्रायः परिवार में बंट जाते हैं। अधिकांश निर्धन परिवार के माता-पिता दोनों रोज़गार के लिए जाते हैं व छोटे बच्चे को कई बार तसल्ली से पोषण देने के लिए घर पर कोई नहीं बचता है। छोटे बच्चे की देखभाल के लिए प्रायः उससे बड़े बच्चों को घर पर रहने को कहा जाता है जिससे उनका स्कूल छूट जाता है।

इन विभिन्न समस्याओं का एक समाधान यह है कि 6 महीने से 3 वर्ष आयु वर्ग के लिए गावों में क्रेश की स्थापना की जाए। ऐसा ही एक प्रयास छत्तीसगढ़ के बिलासपुर ज़िले में जन स्वास्थ्य सहयोग नामक संस्था ने किया है। इस संस्था की ओर से कोटा व लोरमा प्रखंडों में लगभग 90 फुलवारियां (क्रेश) चलाई जा रही हैं। प्रत्येक फुलवारी में प्रायः 10 से 25 बच्चे होते हैं व इनके संचालन के लिए स्थानीय समुदाय में से दो महिलाओं को चुना जाता है। प्रतिदिन बच्चे क्रेश में औसतन सात घंटे रहते हैं व इस दौरान उन्हें एक बार सूखा पौष्टिक सत्तू दिया जाता है और दो बार ताज़ा पका हुआ खाना दिया जाता है। प्रति सप्ताह दो बार उबला अंडा भी दिया जाता है।

इस फुलवारी कार्यक्रम के समन्वयक रवीन्द्र कुरबुड़े बताते हैं, ''इस कार्यक्रम से निश्चित तौर पर बच्चों के पोषण में सुधार हुआ है। छोटे बच्चों ने खाने से पहले हाथ धोने जैसी आदतें सीखी हैं व घर में माता-पिता को कहते हैं कि खाने से पहले हाथ धोएंगे।''

पोषण के साथ फुलवारी में बच्चे गीत गाते हैं और खेल खेलते हैं। क्रेश में कुछ खिलौने भी रहते हैं। स्कूल जाने से पहले की उनकी कुछ तैयारी भी हो जाती है। उन्हें सफाई से रखा जाता है और वे क्रेश की देखरेख में सुरक्षित भी रहते हैं। 7 महीने का बच्चा बड़े बच्चों की देखा-देखी ताली बजाता है और कुछ उन्हीं की तरह गीत के बोल कहने का प्रयास करता है। तीन वर्ष का बच्चा अपने को सबसे सीनियर अनुभव करता है और छोटे बच्चों को समझाता है। कुछ समय के लिए सब बच्चों को सोने को कहा जाता है हालांकि बाद में उठने के वक्त सब एक साथ उठने में आनाकानी करते हैं।

फुलवारियों के फील्ड समन्वयक अनिल बामने बताते हैं, इन फुलवारियों का एक अतिरिक्त लाभ यह हुआ है कि जो बड़े बच्चे छोटे बच्चों की देखरेख की ज़िम्मेदारी के कारण पहले स्कूल नहीं जाते थे वे अब स्कूल जाने लगे हैं।

हाल ही में फुलवारियों के एक अध्ययन में निष्कर्ष निकला है कि यहां बच्चे पहले से अधिक प्रसन्न हैं और उनका स्वास्थ्य भी सुधरा है। जो बच्चे फुलवारी में नियमित आते हैं उनके वज़न में भी अपेक्षित वद्धि हुई है। कुल मिलाकर गांवों में विशेषकर निर्धन परिवारों के लिए क्रेश चलाने का यह फुलवारी कार्यक्रम काफी सफल रहा है और संकेत देता है कि देश में ग्रामीण क्रेश का कार्यक्रम व्यापक स्तर पर अपनाया जाना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***